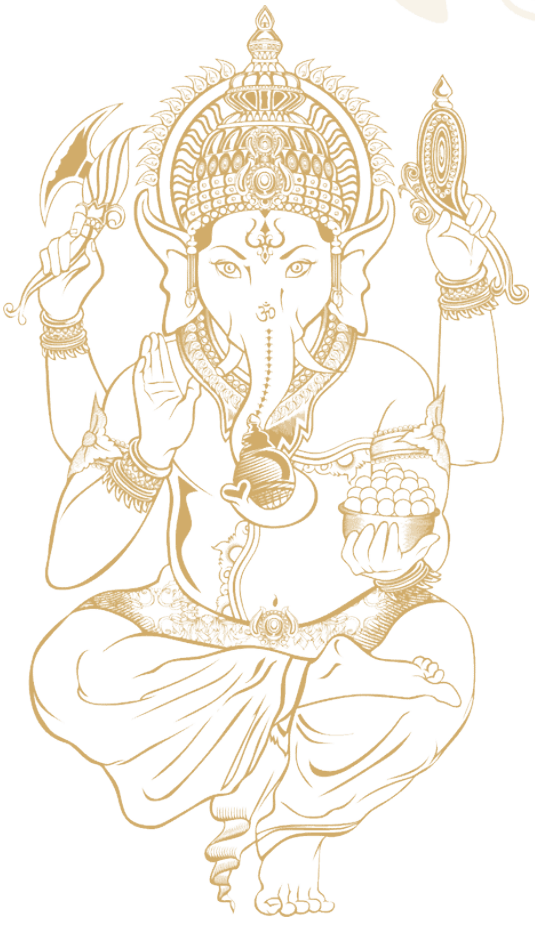

Abhishek p Singh

Garima Singh

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121247602

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
3-04/02/1996	जन्म तिथि	28/03/1998
शनि-रविवार	दिन	शनिवार
घंटे 04:00:00	जन्म समय	18:58:00 घंटे
घटी 53:16:32	जन्म समय(घटी)	32:43:50 घटी
India	देश	India
Gorakhpur	स्थान	Gorakhpur
26:45:00 उत्तर	अक्षांश	26:45:00 उत्तर
83:23:00 पूर्व	रेखांश	83:23:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:03:32	स्थानिक संस्कार	00:03:32 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:41:23	सूर्योदय	05:52:28
17:40:05	सूर्यास्त	18:11:17
23:48:17	चित्रपक्षीय अयनांश	23:49:50

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शनि 5वर्ष 10मा 9दि		07:42:55	धनु	लग्न	कन्या	25:01:36	बुध 12वर्ष 10मा 6दि	
शुक्र		20:34:38	मक	सूर्य	मीन	13:50:09	शुक्र	
14/12/2025		12:33:18	कर्क	चंद्र	मीन	19:55:17	02/02/2018	
14/12/2045		27:03:24	मक	मंगल	मीन	24:30:14	02/02/2038	
शुक्र	14/04/2029	26:29:40	धनु	बुध व	मीन	27:37:47	शुक्र	03/06/2021
सूर्य	14/04/2030	13:03:35	धनु	गुरु	कुंभ	18:34:15	सूर्य	03/06/2022
चन्द्र	14/12/2031	00:03:01	मीन	शुक्र	मक	27:21:09	चन्द्र	02/02/2024
मंगल	12/02/2033	28:36:02	कुंभ	शनि	मीन	27:30:36	मंगल	03/04/2025
राहु	13/02/2036	25:34:16	कन्या व	राहु व	सिंह	16:32:21	राहु	03/04/2028
गुरु	14/10/2038	25:34:16	मीन व	केतु व	कुंभ	16:32:21	गुरु	03/12/2030
शनि	14/12/2041	07:31:20	मक	हर्ष	मक	17:54:33	शनि	02/02/2034
बुध	14/10/2044	02:08:52	मक	नेप	मक	07:57:44	बुध	02/12/2036
केतु	14/12/2045	09:01:53	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	14:08:54	केतु	02/02/2038

लग्न-चलित

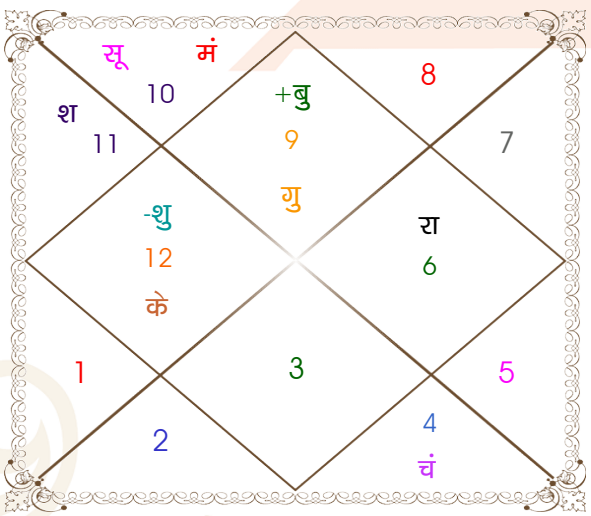

लग्न-चलित

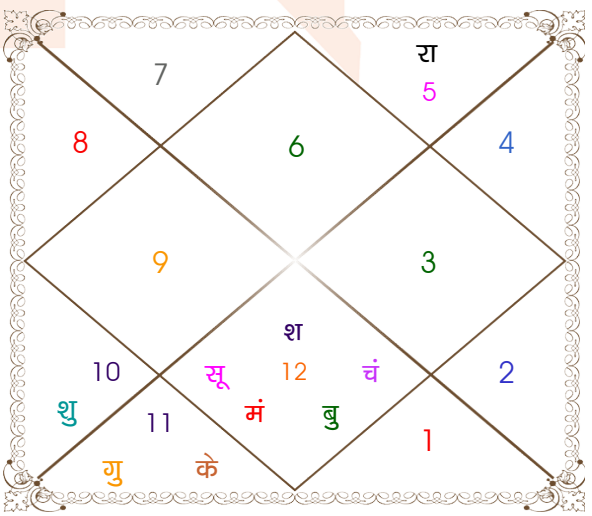

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	जलचर	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मेष	गज	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	चन्द्र	गुरु	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	कर्क	मीन	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.00		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

।ड्डीपीमा चै पदही का वर्ग मेष है तथा ळंतपउै पदही का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ।ड्डीपीमा चै पदही और ळंतपउै पदही का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

।ड्डीपीमा चै पदही मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है।

ळंतपउै पदही मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र ळंतपउै पदही कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि ।ड्डीपीमा च ैपदही कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

।ड्डीपीमा च ैपदही तथा ळंतपउ ैपदही में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।